आन्या काम्पे

ये पत्र न जाने किन किन पोस्टऑफिसों मे भटकता रहा!इसके पते पर बस मेरा फर्स्टनेम सही लिखा था. बाकी सब कुछ गलत था।पते की लिखावट भी जानी पहचानी नही थी।मुझे ये पत्र अपने ब्रीफकास्टेन के ऊपर रखा मिला।ये एक संयोग ही था कि इस पत्र पर मेरी नजर पड़ गई थी।इसे लिए मै अपने अपार्टमेन्ट मे आया।हलो प्रमोद पढने के बाद तत्काल मै ये जानना चाहा कि आखिर इस पत्र को लिखा किसने है!मागदालेना और फ्राईबुर्ग पढने के बाद मेरी उत्सुकता कुछ ज्यादे ही बढ गई।सहज मैने पत्र पढना शुरू किया ःअविकल ःहलो प्रमोद!तुम शायद मुझे भूल गये होगे!मै आन्या की छोटी बहन हूँ और बिना उसे बताये तुम्हे ये पत्र लिखने बैठी हूँ।ये पत्र मै यहॉ के एक हॉस्पीटल मे बैठी लिख रही हूँ.जहॉ आन्या दो सप्ताह से एक इन्टेनसिव वार्ड मे है।वायराऊथ के हाईवे पर उसका कार एक्सिडेन्ट हो गया था।अभीं तक वो कोमा मे है।मै चाहती हूँ कि तुम आ कर उससे मिल लो।रहने वहने की तुम फिक्र नही करना।तुम मेरे साथ भी रह सकते हो।अगर मेरे साथ तुम न रहना चाहो. तो तुम मम्मी पापा के संग भी रह सकते हो।उनके पास अलग से एक गेस्टरूम है।वहॅ तुम्हे किसी बात की कोई तकलीफ नही होगी।अगर तुम मुझे फोन करके ये बता दोगे कि तुम कब आ रहे हो. तो मै तुम्हे लिवाने आ जाऊँगी।

एक अस्फूट स्वर मेरे मुँह से निकला आन्या काम्पे. एक नाम जिसे मै भूला तो नही था. पर उसे भूलने की कई नाकामयाब कोशिशें कर चुका था।मागदालेना का ये पत्र भी भी मेरी समझ के बाहर का था।आखिर वो क्यों चाहती है कि मै फ्राईबुर्ग आऊँ!किस अधिकार से आखिर उसने ये पत्र मुझे लिखा है!आन्या से अब मेरा सम्बन्ध भी क्या रह गया है!

इस पत्र को मै दसों बार पढ डाला।फ्राईबुर्ग जाऊँ या न जाऊँ. ये निर्णय मुझसे लिया ही न जा रहा था।बर्लिन मे आन्या ने मुझे अपने घर पर खाने के लिये नही बुलाया था।मुझे ये कहने को बुलाया था कि वो जानती है कि मै उससे प्यार करता हूँ.जिसका कोई प्रतिदान उसके पास न है और न होगा।मै तुम्हे इसकी वजह नही बता सकती. उसका ये कहा आज तक मेरा मन उदास कर जाता है।घर पर आये मेहमान के साथ इस तरह का वर्त्ताव थोड़े ही किया जाता है!ये सब वो मुझे कहीं और भी तो कह सकती थी!इसके लिए घर पर बुलाना जरूरी तो न था!उसने मेरा प्रेजेन्ट भी वापस कर दिया. जो मैने उसे उसके बर्थडे पर कुछ दिनो पहले दिया था।वो मुझसे अब कोई सम्बन्ध नही रखना चाहती थी।मैने उससे एक शब्द भी नही कहा।उठा और अपने घर चला आया।मुझसे मेरी सारी भावनायें रूठ चली थीं।मै अपने आप को बड़ा अपमानित महसूस कर रहा था।

मागदालेना का ये पत्र मेरी पूरी शाम को अस्तव्यस्त किये हुए था।

ये शनिवार का दिन था।सुबह से ही बर्लिन को एक कोहरे ने ढॅक रखा था।एक बहुत ही झिनी सी वर्षात न जाने कब शुरू हो गई थी. जो रूकने का नाम ही न ले रही थी।नंगे पेंड़ों की डालियॉ बिल्कुल धूमिल सी हो चली थीं।जब तब रह रह कर बर्फीली हवायें भी चलती थीं. जिनमे समाई ठंढ तो जैसे हडियों मे ही जा घूसती थी।सूर्य का दूर दराज तक कोई नामोनिशॉ न था।इस बार भी यहॉ के लोग एक्समस पर बर्फबारी का इन्तजार ही करते रह गये।यहॉ का तापमान गिरता और बढता रहा. पर बर्फ नही गिरी।एक्समस जितने उत्साह के साथ आया था. उतना ही निराश करके जा चुका था।अब यहॉ के लोग इयर्स इव का इन्तजार कर रहे थे. जो तीन दिनो के बाद आने वाला था।जिस एक्समसट्री को हर परिवारों मे सुरूचिपूर्वक सजा कर उसकी जड़ो पर खरीदे प्रेजेन्टस रखे जाते थे. अब उन्हे घरों से निकाल कर सड़कों पर फेंका जा चुका था।इतनो वर्षो के बाद भी मै यहॉ इनके पर्वो मे उत्साहित हिस्सा तो नही लेता था. पर चौबीस दिसम्बर की शाम को न जाने क्यों मेरा एकाकीपन कुछ ज्यादे ही बढ जाता था।शायद इस वजह से कि एक्समस एक पारिवारिक पर्व है और इसे अपने परिवार मे ही मनाया जाता है।इस तरह का परिवार मेरे पास नही था।

मै कुछ छोटी मोटी खरीददारियों के लिए घर से बाहर निकला था।सड़कों पर पैदल चलने वाले तो कम ही दिख रहे थे. पर बर्लिन शहर एक्समस पर्व से उबर कर अब थोड़ा सहज हो चला था।श्लोसस्ट्रासे की सजावटें धूमिल तो नही पड़ी थीं. पर उतनी जगमग भी नही रह गई थीं।न जाने क्यों पिछले दो चार दिनों से मुझे आन्या की याद इस कदर क्यों आ रही थी!उठते बैठते सोते जागते मै अपने आप को उसी मे लिप्त पाता था।मै अपने घर वापस बाद मे आता था. उसके पहले उसकी यादें वहॉ बिखरी होती थीं।उस घर मे. जिसके दरवाजे तक ही वो सिर्फ एक बार आई थी. और वो भी मुझे एक पौधा भेंट मे देने के लिए।उसके कहे शब्द न जाने मुझे कितनी बार याद आये और आते रहे।इन शब्दों मे एक बार ऑसू शब्द का भी जिक्र आया था. जो मै उसकी ऑखों मे कभीं नही देखना चाहता था।

ःमै वापस फ्राईबुर्ग जा रही हूँ।तुम्हे मै इस पौधे को भेंट मे देने के लिए लाई थी।इसे रख लो।इसका नाम ट्रेनेन्डेस हैर्त्स है।नवम्बर महीने मे इसमे एक लाल फूल खिलता है. जो देखने मे हृदय जैसा होता है।ये फूल पन्द्रह दिनो तक अपनी डाल से लगा अपनी सुन्दरता बिखेरता होता है. जिसे सभी निहारते हैं।पर ये फूल ऑसुओं मे रोता भी है।इसके ऑसुओं को कोई भी नही देखता।

आन्या मेरी ऑखों के सामने अपने दोनो हॉथों से इस पौधे को उठाये खड़ी थीःमै तुम्हारा दिल सपने मे भी नही दुखाना चाहती थी. फिर भी दुखा गई।

अचानक उसके गाल थरथराने लगे।उसके हॉथों से गमला लेकर मैने फर्श पर रख दिया।आन्या के दाहिने ऑख से ऑसू का एक बून्द गिरने से पहले अपना आकार बड़ा किये चला जा रहा था।उसे मै अपनी तर्जनी पर ले लिया।अनायास मैने उसका दाहिना हॉथ थाम लिया।बचपन से ही कोई कसम लेने से पहले मै किसी का दाहिना हॉथ हमेशा थाम लिया करता था।

होफ मे एक गहरे नीले रंग की फोर्ड पीकअप खड़ी थी जिसकी स्टेयरिंग पर शायद आन्या की छोटी बहन मागदालेना बैठी थी।दॉई तरफ का दरवाजा खुला हुआ था।आन्या इस पीकअप की तरफ लगभग दौड़ती जा रही थी।अपने दोनो हॉथों से हवाओं को दॉये बॉये टालते हुए।कुछ इसी तरह वो दौड़ा करती थी।

एक गोलाईदार चक्कर लेकर ये पीकअप गेरानियनस्ट्रासे की ओर बढ चली और देखते ही देखते ऑखों से ओझल हो गई।

यकायक बारिश कुछ तेज हो चली थी।छोटे मोटे ओले भी पड़ने लगे थे।खरीददारी के झोले से किसी तरह अपना सर छुपाये तेज कदमों से मै अपने घर की ओर बढ चला।

एक परिचय जिसे मै दो चार शब्दों के दायरे से बाहर निकाल कर एक न कभीं टूटने वाले सम्बन्ध का नाम देना चाहता था. धरा का धरा ही रह गया।आन्या को बर्लिन से गये तीन वर्ष हो चले थे।इन तीन वर्षो मे मुझे उसका एक औपचारिक कार्ड तोसकाना से मिला था।उसने अपनी पढाई

पूरी कर ली थी।उसके पास एक परमानेन्ट नौकरी भी थी।तोसकाना मे वो अपनी छुट्टियॉ मना रही थी।अब वो अपने माता पिता के संग नही रहती थी।वोल्फलीनस्ट्रासे पर उसने किराये का एक अपार्टमेन्ट ले रखा था.जो उसके माता पिता के घर से ज्यादे दूर न था।
आन्या से मेरा सम्बन्ध कोई खास लम्बा नही था और न तो इस सम्बन्ध मे प्यार और आश्वासन जैसे वजनी शब्दों का इस्तेमाल ही हुआ था।मै जहॉ काम करता था.वो वहॉ अपने छ महीने की प्रैक्टिकल करने आई थी।दूसरी जर्मन लड़कियों और उसमे कई बातों का अन्तर था।आन्या फ्राईबुर्ग की रहने वाली थी।उसके माता पिता एक ही स्कूल मे पढाया करते थे।आन्या से छोटी एक बहन थी.मागदालेना.जो अपने स्कूल की पढाई खत्म करके नर्स की ट्रेनिन्ग कर रही थी।काम के बाद मै रोज ही आन्या को उसके गेस्टहाऊस पहॅुचाने जाया करता था।ये गेस्टहाऊस हमारे हास्पीटल के ही परिशर मे था।दोपहर का खाना भी हम साथ ही खाया करते थे।इस बीच मुझे एक और बात का पता चल चुका था कि वो हर रविवार को एक न्यूअपोस्टोलिक चर्च मे प्रेयर्स के लिए जाया करती है और अपने संस्कारों और विचारों से एक हद तक धार्मिक और संकीर्ण भी है।आन्या की शायद यही एक बात मुझे खलती थी।अपने चर्च के बारे मे वो मुझे अक्सर बताया करती थी.पर ये कभीं नही बताती थी कि उसे अपने धर्म और संस्कारों से किस हद तक आजादी मिली हुई है।एक धर्म और संस्कार से मै भी बॅधा हुआ था.पर मेरे पास एक आजादी थी।मै अपने देश से दूर था और जर्मनी मे सदा के लिए रहने का फैसला कर चुका था।
आन्या को हमारे यहॉ कोई खास पैसे नही मिलते थे।बहुत सम्हाल कर वो अपने पैसे खर्च किया करती थी.पर उसे ये मंजूर नही था कि कैन्टिन मे मै उसके लिए कुछ खरीद दूॅ।जब मै उसकी ट्रे देखता था.तो शर्म से अपने ट्रे का कुछ सामान वापस सेल्फ मे रख आता था।एक छोटी तश्तरी मे थोड़ी सी सलाद और एक पावरोटी.यही उसके दोपहर का खाना था।शाम का खाना वो हर दिन अपने हॉथों से ही बनाती थी।
बर्लिन मे उसके एक सगे चाचा भी सपरिवार रहते थे।आन्या का पूरा शनिवार उन्ही के घर गुजरता था।हर शनिवार को उसकी चाची उसे अपने हॉथों की बनाई ढेर सारी पेस्ट्रियॉ पकड़ा दिया करती थीं।कभीं कभीं सोमवार को वो एकाध पेस्ट्रियॉ काम पर लाती थी और मुझे भी चखने को देती थी।बहुत कहने सुनने पर वो बस एक कप कॉफी के लिए कभी कभार हॉ कह पाती थी।
सप्ताह भी न गुजरा होगा कि आन्या मुझे अपने गले से लगाने लगी थी।दूसरों को तो वो अपना हॉथ भी न देती थी।अब वो इसी तरह मुझसे मिलती थी और इसी तरह मुझसे विदा भी लेती थी।उसका ये अपनापन मुझे अर्न्ततम तक असहज कर जाता था।
सोमवार से लेकर शुक्रवार तक मेरे पास आन्या का साथ होता था.फिर वो दो दिनों के लिए एक तरह से लोप हो जाया करती थी।जब तब मेरा मन हैन्डी पर उससे बात करने को तो होता था.पर मेरे पास कोई विशेष कारण या विषय नही हुआ करता था।जितना या फिर जिस हद तक हमे एक दूसरे के बारे मे जानना था.हम जान चुके थे।एक परिवार की आस उसे उतनी न थी.जितनी कि मुझे थी।जिस राह पर मै बहुत आगे जा चुका था.उस पर वो एक पग रखने से भी डरती थी.और उसके इसी डर ने मुझे व्यस्त कर रखा था।
गर्मी के दिनो मे हम अपना खाना लिये परिशर के लॉन की तरफ बढ चलते थे।अगर कोई बैंच खाली मिल गई.तो वहीं बैठ कर खा लेते थे .वरना घासों पर ही बैठ जाते थे।खाना खाकर फिर हम घूमने निकल पड़ते थे।गुलाब रोडोडेन्ड्रन आत्सालेयेन डिस्टल और न जाने किन किन फूलों से ये लॉन भरा रहता था।कई जन्गली फूल भी वहॉ खिले रहते थे।उन्ही मे से एकाध फूल तोड़ कर मै उसे पकड़ा देता था।हमारे लाईब्रेरी मे उसे भी एक मेज मिली हुई थी।उसी पर वो इन फूलों को एक एक कोनिकल बोतल मे सजा देती थी।
कभीं कभीं काम के बाद घर जाने से पहले हम इस लॉन की किसी बैंच पर घन्टों बैठे आसपास की फैली सुन्दरता निहारा करते थे।एक दिन मैने उससे पूछ ही लियाःफ्राईबुर्ग मे तुम्हारे पास कोई दोस्त भी है!
ःहॉ!कई हैं।कहके वो मुस्कराने लग पड़ी।
ःमै कईयों के बारे मे नही पूछ रहा।कोई के बारे मे पूछ रहा हूॅ।
ःइन कईयों और कोई मे कोई अन्तर होता है क्या!
ःमुझे तुम्हे ये अन्तर भी बताना पड़ेगा!
बिना कुछ कहे वो उठ पड़ी।दुबारा मैने उससे इस बारे मे कभीं न पूछा।
एक बार वो बीमार पड़ गई।इसका पता मुझे काम पर चला।मैने उसे कई बार फोन भी किया.पर सब कुछ रिप्लायर मे ही गया।सेक्रेटेरियट से मुझे बस इतना ही पता चल पाया कि उसे हल्का सा जुकाम हो गया है और थोड़ा बहुत फीवर भी है।जाने को तो मै उसके कमरे मे जा सकता था.पर गया नही।मेरे परिचितों मे एक तुर्क है।उसकी पत्नी गेस्टहाऊस मे ही काम करती थी।उसी के हॉथों कुछ फल और पीने के लिए कुछ जूस मैने गेस्टहाऊस मे भिजवा दिये।जब मै उसके नाम एक स्लिप लिखने बैठा.तो मुझे ये ही पता नही चल रहा था कि मै उसे प्रिय लिखूॅ या हलो।
शाम को संयोगवश उसका हैन्डी औन था और वो फोन पर मिल भी गईः
ःमै प्रमोद बोल रहा हूॅ।तुम्हारी तबीयत कैसी है!
ःमेरी तबीयत तो ठीक है.पर एक बात तो बताओ
ःकौन सी बात!
ःखुद क्यों नही आये!
ःखुद कैसे आता!किस सम्बन्ध से आता!
ःअपने स्लिप पर प्रिय को काट कर हलो क्यों लिखा!
ःइस डर से कि तुम बुरा न मान जाओ।तुम्हारे सम्बन्ध मे मुझे बड़ा सावधान रहना पड़ता है।डर लगा रहता है कि तुम्हे खो न दूॅ।
टेलीफोन के दूसरे छोर से अब मुझे सिर्फ आन्या की सॉसे ही सुनाई पड़ रही थीं।ऐसी बातें वो बस सुन लिया करती थी।जबाब मे कुछ कहती नही थी।
कभीं कभीं मुझे ऐसा लगता था कि आन्या ने मेरे लिए कुछ सीमायें तय कर दी हैं।जब भी मै इनसे बाहर जाता हूॅ.मुझे कुछ हासिल नही हो पाता।आन्या को एक उदासी घेर सी लेती है।
सब कुछ टाल कर मै तत्काल औपचारिक बातों पर आ गया।
दो दिन वो काम पर न आई।तीसरे दिन वो काम पर मेरे लिए अपने हॉथों का बनाया एक केक लाई थी।इसे जर्मनी मे एक हद तक व्यक्तिगत

कहा जा सकता है।जो दो चार फोन मैने किये थे.उनके लिए मुझे दसों बार डान्केश्योन सुनना पड़ा था।
फिर उसका जन्मदिन आया।उसने मुझे खुद कुछ नही बताया।कलिगों से मुझे इसका पता चला।वे पैसे जमा कर कुछ समवेत आन्या के लिए खरीदना चाहते थे।मेरे पास भी आये थे।मैने उन्हे मना कर दिया।अपने डिपार्टमेन्ट की एक यही बात मुझे बहुत बुरी लगती थी।किसी का जन्मदिन आया नही कि चल पड़ते हैं पैसा जमा करने।अगर तुम्हे कोई अच्छा लगता है तो अपनी तरफ से उसे कुछ भेंट मे दे दो या फिर एक सुन्दर सा कार्ड ही लिख दो।पर इन्हे कौन समझाये!किसी के लिए पैसे जमा करना हमारे डिपार्टमेन्ट मे एक प्रथा सी बन गई है।
आन्या घड़ी नही पहनती थी.पर उसके पास बिना बेल्ट के एक घड़ी होती थी।इसे वो अपनी जेब मे रखती थी।मैने उसके लिए एक जेब वाली घड़ी खरीद ली।दुकान पर ही उसे रैप भी करवा लिया।उसके लिए एक कार्ड भी खरीदा.जिसका टेक्सट मुझसे नही लिखा गया।हर सोचा वाक्य बिना मुझसे पूछे कुछ ज्यादे ही भावुक हो जाता था।
दूसरे दिन काम के लिए मै समय से कुछ पहले ही चल पड़ा।सात भी नही बजे होंगे और मै गेस्टहाऊस के इन्ट्रैन्स पर था।आन्या अपनी हॉथों मे एक बड़ा सा प्लेट थामे लिफ्ट से बाहर निकली।प्लेट एक सिल्वरफोलियो से ढॅका हुआ था.पर मै समझ सकता था कि उसमे एक केक है।मुझे देख कर एक बार वो विस्मित तो हुई.पर बेहद खुश भी हुई।अपनी प्लेट को पास के ही खिड़की के ताखे पर रख कर लगभग मेरे गले से झूल गई।मिनटों वो मुझे अपने से समेटे रखी।मै इतना भावुक हो चला था कि मुझसे कामनायें तक नही कही गई।जब उसने अपना प्रैजेन्ट खोला.तो आवाक ही रह गई।
उसका केक मैने अपने सायकल के कैरियर पर टिकाया और फिर हम काम पर आ गये।सारे कलिग्स गेट पर ही आन्या का इन्तजार करते दिखे।हमारा चीफ भी उन्ही के संग खड़ा था।सबने उसे इकट्ठे बधाई दी।इन लोगों ने अपने जमा किये गये पैसों से आन्या के लिए एक इलेक्ट्रिक टोस्टर खरीदा था।अपने केक का एक छोटा सा टुकड़ा लेकर वो खुद मेरे पास आई थी।
आन्या अट्ठाईस जनवरी को पैदा हुई थी।आठ फरवरी को उसका प्रैक्टिकल खत्म होने वाला था।अट्ठाईस जनवरी और आठ फरवरी के मध्य एक ऐसी भी शाम थी.जो मेरे जीवन की सबसे सुन्दर शाम बनते बनते रह गई।इस शाम को आन्या ने मुझे शाम के खाने पर बुलाया था।मै सुबह से ही उत्तेजित था।उसका आमंत्रण मेरे लिए एक ऐसा आमंत्रण था.जो अब तक के ऐसे आमंत्रणों पर छा सा गया था।सुबह ही बाजार जाकर मै उसके लिए एक बेहद ही खूबसूरत गुलदस्ता बँधवा लाया था।नीले लिलियन और जमनी रंग के गुलाब एक दूसरे के संग बेहद फब रहे थे।घड़ी की सूईयॉ तो जैसे जाम ही हो चली थीं।कॉप कॉप कर आगे बढ रही थीं।चार बजाने का नाम तक न ले रही थीं।मेरी अधीरता अब मेरे वश मे नही थी।जैकेट पहन कर ऐसे ही घूमने निकल पड़ा।आन्या की छोटी से छोटी बातें जो मुझसे सम्बन्धित थीं या फिर मेरे लिए कही गई थी.मुझे याद आये जा रही थीं।उसके चेहरे का एक एक भाव मेरी स्मृतियों मे अंकित था।एक चलचित्र की नाई ऑखों के सामने तैरे जा रहा था।मुझे उसका साथ तो मिला हुआ था.पर उससे मुझे ये भी कहने की हिम्मत नही थी कि मै उसे चाहता हूॅ।डर लगा रहता था कि कहीं उसका साथ भी न छूट जाय।
आन्या अपनी पढाई की मेज पर खाना सजाये मेरा इन्तजार कर रही थी।इन पिछले छ महीनों मे मै आज पहली बार उसे एक लम्बे फ्रॉक मे देख रहा था।उसने हल्का सा मेकअप भी कर रखा था।गले मे सोने की पतली सी जंजीर.कानों मे छोटी छोटी बालियॉ.मै तो उसे देखता ही रह गया।आन्या अपना कहा तीन बार दुहराया करती थीःआओ.अन्दर तो आओ.बाहर क्यों खड़े हो!खाओ.खाओ न.खा क्यों नही रहे हो!दो बार कहने के बाद तीसरी बार फिर वो अपना अधिकार भाव जताती थी।फ्रॉक का गला बेहद छोटा था.फिर भी वो उस पर अपनी दाहिनी हॅथेली रखे रहती थी।
मेरे दिये फूलों को वो एक प्रिजर्व्ड खीरे की खाली शीशी मे सजा चुकी थी।रह रह कर वो उन्हे सॅवार आती थी।हम एक दूसरे के सामने बैठे हुए थे.पर मुझसे उसकी नजरें झेली नही जा रही थीं।मै नज़रें झुकाये खाये जा रहा था।हमारे दरम्यान बातचीत का विषय बर्लिन शहर था.जो उसके अनुसार एक बेहद जीवन्त शहर था।मै जर्मनी के कई शहरों मे जा चुका था.पर फ्राईबुर्ग मै कभी नही गया था।एक छोटा सा पहाड़ियों से घिरा शान्त शहर.जो शाम के आठ बजे ही सोने की तैयारियों मे लग जाता था.जबकि बर्लिन के डिस्कोस रात के दस बजे खोले जाते थे।मेरे जीवन को मेरे कई दोस्त उबाऊ मानते थे।मै उनकी तरह आये दिनो यहॉ के डिस्कोस.पब्स या रेस्त्रआओं मे नही जाया करता था।इनमे मेरी कोई अभिरूचि भी नही थी.पर मै बर्लिन के हर छोटे बड़े पार्को को जानता था।मै यहॉ की हर छोटी बड़ी नदियों.तालाबों और कनालों को जानता था।
हम खाना खा चुके थे।पूछ कर आन्या दो कप कॉफी बना लाई थी।उसके यहॉ आये मुझे छ घन्टे से ऊपर हो चले थे।हम इत्मिनान से बैठे हुए थे।दूसरे दिन हम दोनो को ही काम पर नही जाना था।
अब एक उस यवनिके को गिरना था जिसका मुझे सपने मे भी भान नही था।बड़े ही स्थिर आवाज मे आन्या मेरे दिये प्रैजेन्ट को वापस करते हुए बोली कि उसे इस बात का पता है कि मै उससे प्यार करता हूॅ.पर उसका कोई प्रतिदान न तो उसके पास है और न होगा।इसकी वजह वो मुझे नही बता सकती।उसे एक पल भी नही लगा होगा अन्जान बनने मे और मै न जाने कौन कौन सी आशायें इस शाम से बॉध रखा था।।
मै चुपचाप उठा.कॉफी का प्याल एक तरफ सरकाया और दरवाजे की ओर बढा।आन्या से बिना कुछ कहे मै वापस घर चला आया।आत्मग्लानि से मेरा मन जला जा रहा था।मै अपने आप को अपराधी भी महसूस कर रहा था।बेवजह आन्या को मेरी वजह से एक यंत्रणा सहनी पड़ी।झंझावतों की भॉति न जाने कितने विचार मुझे एक साथ झकझोरे चले जा रहे थे।टेलीफोन का प्लग मैने निकाल दिया और दरवाजे की जन्जीर खींच दी।
आने वाले सोमवार से मैने एक सप्ताह की छुट्टी ले ली।आन्या अपने इन्कार की वजह नही बताना चाहती थी.जो मेरे लिए बड़ा जरूरी था।आन्या से पहले मै जिन लड़कियों से मिल चुका था.उनमे एक दो के पास विदेशियों के प्रति एक आरोपित पूर्वाग्रह था.जिसकी कल्पना मै आन्या की शिक्षाओं मे नही कर सकता था।इनके चर्च इनके व्यक्तिगत मामलों मे प्रत्यक्ष हस्तक्षेप तो नही करते.पर इन्हे परोक्ष हस्तक्षेप करते हुए मैने देखा है।पता नही आन्या या फिर उसके परिवार का अभिष्ट न्यूअपोस्टोलिक चर्च ऐसे मामलों मे कितना उदार था!मै इस चर्च को करीब से नही जानता था।मुझे आन्या का मेरा बर्थडे प्रेजेन्ट वापस करना भी समझ मे नही आ रहा था।
अगर आन्या बर्लिन छोड़ने से पहले मुझसे मिलने न आई होती.तो शायद मै इस अध्याय को बन्द ही कर दिया होता।ऐसे भी मुझे क्या करना था इस अध्याय का.जिसमे मै खुद ही हास्यास्पद हो चला था!हमारे जीवन के न जाने कितने सम्बन्ध हमारे मनो मे यादों की शक्ल मे जीते हैं।आन्या

भी ऐसे ही सम्बन्धों मे से एक थी। बहुधा मै उसकी तरफ लौटा करता हूॅ। उसका दिया मेरे पास उसका एक पौधा ही नही बल्कि कागज का एक टुकड़ा भी है जिसे उसने मेरी सायकल की सीट पर रख कर मुझे देने के लिए अपना हैन्डीनम्बर लिखा था। आन्या लैफ्टहैन्डर थी पर उसकी लिखावट मोतियों जैसी थी। पता नही इतने वर्षो के बाद उसका हैन्डीनम्बर फौरी था या नही पर ये मेरे पीनबोर्ड पर आज भी टॅका हुआ था। इन वर्षो मे आन्या का ट्रेनेन्डेस हैर्त्स भी काफी बड़ा हो चला था। नवम्बर महीने मे उसमे एक लाल रंग का फूल खिलता तो जरूर था पर उसे रोते मैने अब तक नही देखा था। हर सप्ताह एक बार मै उसके एक एक पत्ते को भींगे रूई के फाहों से पोंछ दिया करता था। मेरे पीन बोर्ड पर उसका तोसकाना से लिखा कार्ड भी टॅका पड़ा था। उसे मै न जाने कितनी बार पढ चुका था। कई बार मै आन्या को लिखना भी चाहा पर उसका कहा मेरे कानों मे पिघले शीशे की नाई रिसने लगता था। रह रह कर उसका चेहरा इतना सख्त होने लगता था कि मुझे उसकी यादों को झटक देना पड़ता था।

एक्समस की तरह ही यहॉ का नया वर्ष भी गुजरा। जर्मनी के दूसरे अन्चलों मे वर्फ गिरीं पर बर्लिन सिर्फ प्लस माईनस के तापमानों के मध्य झूलता रहा। सभी को वर्फ का अभाव खला तो अवश्य पर प्रैजेन्टों और पटाखों के मामले मे ये किसी से पीछे न थे। नये वर्ष के आने की खुशी मे दबाके शराबें पी गईं। इकतीस दिसम्बर की शाम को मुझे होफ मे शायद ही कोई ऐसा दिखा होगा जो नशे मे धुत्त न रहा हो। पहली जनवरी को अकस्मात वर्फबारी शुरू हो गई जो रूकने का नाम ही न ले रही थी। ग्यारह भी न बजे होगें कि इर्द गिर्द के मकान पेड़ पौधें सड़के पार्क की गई गाड़ियॉ वर्फ से ढॅक चुकी थी। रह रह कर बन्द खिड़कियों के शीशों पर वर्फ की ऐसी थापें पड़ती थीं कि मन कॉप सा जाता था।

इस तरह सन दो हजार एक का आरम्भ हुआ।

कभीं कभीं मुझे ऐसा लगता था कि मुझमे भी कहीं शरतचन्द्र का देवदास जी रहा है। । बड़ी सावधानी से मुझे जीना पड़ता था। मेरे पास देवदास की तरह वसीयत के मिले पैसे नही थे पर उसकी तरह कोई पारिवारिक जिम्मेवारी भी तो नही थी। उसके पास पारो और चन्द्रमुखी थी। इतनी दया तो कम से कम उसके भाग्य को उस पर आई थी। मेरा भाग्य निर्दयी ही नही बल्कि एक ओछे चरित्र का भी था। बजाय मुझे कुछ देने के मेरी ठिठोली करता था। रह रह कर मुझे चिढाता भी था। फिर भी मै झुक कर या फिर छीन कर कुछ भी पाना नही चाहता था। इन विधियों से पाया सबकुछ मुझे बड़े अस्थिर स्वभाव का लगता था।

मुझे जब भी ऐसा लगता था कि मुझसे मेरी धूरी छूट रही है तो जाके किसी नदी तालाब के तटों पर बैठ जाता था। उनकी गहराई भले ही जितनी भी हो उन्हे अतल मान कर उनकी अतलता मे खो जाता था।

जर्मनी मे रहते मुझे बारह वर्ष हो चले थे। पूरी स्वतंत्रता के बावजूद मुझसे एक ढंग की जर्मन लड़की नही मिल पा रही थी। कह देने मात्र से किसी की संस्कृति तो नही बदल जाती है और मेरी संस्कृति ने मुझे अपेक्षायें भी अपने हिंसाब से दे रखी थीं जो जंजीरों के रूप मे मुझे आबद्ध किये बैठी थीं। अब मै यहॉ अपने किन किन जंजीरों को गिनवाऊॅ!इन जंजीरों को मै तोड़ने मे लग गया। कुछ टूटे तो कुछ टूटने से रहे।

समय के साथ अब मेरे जीवन मे किसी को अपनाने के लिए प्यार ऐसी कोई खास शर्त्त नही रह गई थी। सच तो ये था कि समय के साथ मेरी दशा एक भिखमंगे की तरह हो चली थी जो शक्ल सूरत से किसी राहगीर को दानी समझ कर उससे कुछ पाने की आशा मे उठ कर उसके पीछे तब तक भागता है जब तक कि उस दानी राहगीर की भाषा एक फटकार मे नही बदल जाती है। इस दरम्यान वो न जाने कौन कौन से उपक्रम करता है न जाने कौन कौन से अभिनय करता है!। फिर निराश हो कर अपनी जगह पर आकर बैठ जाता है।

इस सिलसिले का मुझे कोई अन्त नही दिखता था। मै एक पेशेवर भिखमंगा बन चला था।

मागदालेना के पत्र को मै दुबारा पढने बैठ गया। न जाने वो क्यों चाहती थी कि मै फ्राईबुर्ग आकर आन्या से मिल जाऊॅ। । आन्या के कोमा मे जाने का ये मतलब तो साफ था कि उसका एक्सिडेन्ट बेहद सिवियर था पर मै आखिर फ्राईबुर्ग किस अधिकार से जाऊॅ यही मेरे समझ के बाहर का था। बड़ी द्विविधा की स्थिति हो चली थी। तभी मेरी नज़र आन्या के दिये पौधे पर पड़ी जो मुझे बेहद उदास सा दिखा। मैने एक सप्ताह की छुट्टी ले ली। एक रूक्जाक मे जरूरत के कुछ सामान और कपड़े डाले और चल पड़ा बर्लिन के ओमनी बस के पड़ाव की ओर। एक बस कुछ ही मिनटों मे फ्राईबुर्ग जाने वाली थी। मै बस मे जा घूसा। संयोग से मुझे खिड़की से लगी एक सीट मिल गई। फ्राईबुर्ग मै पहली बार जा रहा था। कुछ ही मिनटों मे हम बर्लिन की आबादी से बाहर थे। बस एक सौ बीस किलोमीटर की रफ्तार से हाईवे पर रेंगे जा रही थी। आन्या के चेहरे का भाव सदा एक सा रहता था। उसके चेहरे पर अहर्निश उदासी की एक मोटी सी पर्त्त जमी रहती थी जो उसकी खूबसूरती से एकाकार हो चली थी। मुझे उसकी उदासी सिर्फ एक वजह से खलती थी और वो ये थी कि कहीं उसकी उदासी किसी कारणवश न हो। जब मै उसे ये बताता था तो वो हल्के से मुस्करा कर बात चीत का विषय ही बदल देती थी। मै प्रायः अपने ईश्वर से इस बात की प्रार्थना करता था कि वो आन्या को अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा मे ले लें। उसे किसी बात की सजा न दें। बदले मे मुझे उनसे क्या मिला!आन्या का एक्सिडेन्ट जिसे वो चाहते तो टाल सकते थे। आन्या ने मुझे निराश किया। मुझसे अपने सारे सम्बन्ध तोड़ डाले पर मैने कभीं उसके बारे मे बुरा नही सोचा। यही हमारे सम्बन्ध मे कुछ अनमोल सा था।

हमारी बस होलबोर्न पहुॅचने वाली थी। वहॉ हमे पन्द्रह मिनट का ब्रेक मिलना था। कुछ देर पहले ही बस की स्टीवार्डेस इसका एलान कर चुकी थी। रात के नौ बजने वाले थे। नवम्बर का महीना चल रहा था। खिड़की के बाहर की थर्मामीटर माईनस पॉच का तापमान दिखा रही थी पर बस मे प्लस बाईस तापमान था। मैने खिड़की से बाहर देखा। होलबोर्न का रास्टस्टेटे मुझे ऊॅघता ही नज़र आया। बस के तकरीबन सभी यात्री अपना नाक मुॅह ढॅके रास्टस्टेटे की तरफ बढे चले जा रहे थे। मै बस मे ही बैठा रहा। मेरे बगल की सीट खाली थी। उस पर मैने अपना रूक्जाक रखा था। मुझे इस सीट पर से अपनी रूक्जाक होलबोर्न मे हटानी पड़ी। इस सीट पर औसतन एक लम्बी सी लड़की आ कर बैठी जो कपड़े लत्ते से मुझे उतनी सौम्य न दिखी। वो सिगरेटें भी पीती थी पर बनी बनाई खरीदी नही बल्कि वो उन्हे खुद ही बनाती थी। मै खिड़की की तरफ अपना मुॅह किये बैठा रहा। होलबोर्न से बायराऊथ तक हमारे बीच एक फासला बना रहा। बायराऊथ मे हमे आधे घन्टे का ब्रेक मिलने वाला था। वहॉ बस से वो भी मेरी तरह नही उतरी। स्टीवार्डेस से कहके अपने लिए एक कप कॉफी मॅगवाई और अपना परिचय देते हुए मुझसे भी कॉफी के लिए पूछा। कॉफी तो मैने मना कर दिया पर अपना परिचय मुझे उसे देना पड़ गया। अब उसके सवालों का जैसे कोई अन्त ही न था। अपने बारे मे भी वो खुद ही बताती चली गई। ये लड़की आज तक मुझे कई वजहों से याद आती है। पता नही वो आज भी लुफ्थान्सा की विमानें उड़ाती है या नही!पर उसने मुझे खुद ही अपने एक विमान दुर्घटना के बारे मे बताया थाःएक बार मुझे अपना विमान मैक्सिको मे उतारना पड़ गया था। बाऊख लैन्डिन्ग थी। कुछ पैसेन्जर्स घायल हो गये थे। दुबारा मै तब विमान उड़ाई जब सब अच्छे हो गये थे। अगर इनमे से एक की भी मौत हो गई होती तो

शायद इस प्रोफेशन को मुझे छोड़ना पड़ गया होता।उसे मैने आन्या के बारे मे सब कुछ बताया।कहने लगीःप्रमोद!तुम्हारे और आन्या का सम्बन्ध एक अधूरी कविता है.जिसके कुछ शब्द ढूँढने तुम फ्राईबुर्ग जा रहे हो।

जब मै फ्राईबुर्ग पहुँचा.तो सुबह के चार बज रहे थे।सारा फ्राईबुर्ग नींद की अगाढ गोद मे सोया पड़ा था।बर्फ की ऑधियॉ चल रही थीं।बस से बाहर उतरने की मेरी हिम्मत नही हो रही थी।जैकेट के कालर खड़े करके मफलर से से मैने अपने कान और अपना चेहरा ढंका।मेरे इर्द गिर्द एक शहर फैला पड़ा था.जो मेरे लिए नितान्त अन्जान था।इस शहर के लोग मेरे लिए नितान्त अन्जान थे।अभीं अभीं जिस लड़की का मैने जिक्र किया था.उसका नाम एवलीन था।मेरा उसका साथ फ्राईबुर्ग तक रहा।उसने तो जिद़ ही पकड़ ली थीःकम से कम आज मेरे साथ ही रह लो।सुबह नाश्ते के बाद मै खुद तुम्हे आन्या के पास ले चलूँगी.पर मैने उसे मना कर दिया।उसकी गाड़ी पड़ाव के पास ही एक साईड रोड पर पार्क्ड थी।मै उसे उसकी गाड़ी तक छोड़ने गया था।गाड़ी की पिछली सीट के ऊपर लगी एक हूक से उसके यूनिफोर्म लटक रहे थे।गाड़ी मे बैठने से पहले वो झुक कर मुझसे गले मिली और मुझे आलेस गुटे कहा।ःअपनी विमान सावधानी से उड़ाना।बस इतना ही मै उससे कह सका।उसने अपना दाहिना अॅगूठा ऊपर उठाया और एक विमान की ही रफ्तार मे उसकी बे एम बे देखते ही देखते ऑखो से ओझल हो गई।

दो घन्टे मै फ्राईबुर्ग की पड़ाव पर बर्फीली ऑधियों के तमाचे खाते रहा।पॉच बजे इस पड़ाव की पहली दुकान खुली।वहीं मैने कॉफी खरीदी और वहीं से मुझे एक मोटेल का भी पता लगा.जो ज्यादे मॅहगा नही था।ये आन्या के या फिर उसके माता पिता के घर से भी ज्यादे दूर नही था।

नहाते धोते मुझे सात बज गए।पहले सोचा कि अस्पताल चलने से पहले कम से कम मागदा को फोन कर दूॅ.पर न जाने क्यों इसे मैने टाल दिया।एक टैक्सी ली और फ्राईबुर्ग के यूनि क्लिनिक चल पड़ा।रिशेप्सन वालों ने बिना हिल हूज्जत किये मुझे आन्या का पता दे दिया।आन्या को एक इमरजेन्सी वार्ड मे रखा गया था.जो सातवीं मंजिल पर था।आमने सामने छ लिफ्टें थीं.जिनमे से कुछ ऊपर तो कुछ नीचें आ रही थी।हर लिफ्ट के सामने आठ से दस लोग खड़े थे.जो मुझे इस अस्पताल के कर्मचारी ही दिख रहे थे।सभी को अपने वार्डो मे जाने की जल्दी थी।सुबह की शिफ्ट शुरू होने वाली थी।नीचे आकर एक लिफ्ट रूकी ही थी कि फ्लोर के सभी लोग इस लिफ्ट की तरफ भागे।जितने लोग बाहर निकले.उससे दूने उसमे जा अॅड़से।अस्पताल का ये फ्लोर ग्राऊन्ड फ्लोर होने की वजह से कुछ ज्यादे ही जीवन्त था।इसी फ्लोर पर इनका एक कैन्टिन भी था जो खुल चुका था।मै वहीं एक कप कॉफी खरीद कर जा बैठा और भींड़ के खत्म होने या फिर कम होने का इन्तजार करने लगा।मुझे ये सोच कर एक अजीब सी अनुभूति हो रही थी कि पता नही आन्या या फिर उसके घर वाले मुझे देख कर अपनी कैसी प्रतिक्रिया जतायेंगे!मै पहली बार इस शहर में आया था.जो मेरे लिए उन तमाम दूसरें शहरों की तरह सिर्फ इस वजह से अन्जान नही था.क्योंकि ये आन्या का शहर था।हर वो शहर.जिससे मुझे एक व्यक्ति जोड़ता रहा है.मेरे लिए एक खास सा शहर रहा है।अनायास ढेर सी अपेक्षायें मुझे आ कर घेर लेती हैं.फिर मै इस शहर की छोटी से छोटी बातों के प्रति भी कुछ जरूरत से ज्यादे संवेदनशील हो जाता हूँ।

मै कैन्टिन मे बैठा लगभग आधे घन्टे तक लिफ्टों के इर्द गिर्द भींड़ के छॅटने का इन्तजार करता रहा।जब मै लिफ्ट ले कर सातवीं फ्लोर पर बाहर आया.तो देखा कि वहॉ एक अजीब सी शान्ति छाई हुई है।ये एक ओबजर्वेशन वार्ड था।यहॉ बोलने के नाम पर लोग फूसफूसाते थे।चलने के नाम पर तैरते थे।मै भी तैरता इस वार्ड के सिस्टर रूम तक गया।फाइलों मे एक नर्स जूझी पड़ी बैठी थी।इस ग्लास चैम्बर मे नही भी तो आठ से दस लोग रहे होंगे.जिनमे कुछ नर्से थीं.कुछ डाक्टर्स थे।मै फाइलों मे जूझी नर्स के बगल मे जा कर खड़ा ही हुआ था कि उसने अपना सख्त चेहरा ऊपर उठाया और इशारे से मुझे चैम्बर से बाहर जाने को कहा।मै बाहर आ कर फ्लोर पर टॅगे एक तश्वीर को देखने लगा।इस तश्वीर मे दुल्हन की तरह सजी एक ट्रक खड़ी थी और नीचे लिखा थाःपेशावर पाकिस्तान।सामने वाले शीशे के ऊपर बाहर कि तरफ लकड़ी के तराशे दो पक्षी एक दूसरे की ऑखों मे झॉकें जा रहे थे।न जाने ये कौन से पक्षी थे!बगूला थे या हंस!चकवा थे या तोता!ये सजा सजाया ट्रक एक शादी के लिए था.पर मुझे ये भी पता नही था कि पाकिस्तान मे इस तरह की सजी सजाई ट्रक वर के घर जाती है या वधू के घर!

ःमै आप के लिए क्या कर सकती हूँ!वो चैम्बर वाली नर्स मेरे समीप खड़ी थी।

मैने गिड़गिड़ाना शुरू कर दियाःआपके वार्ड मे एक आन्या नामकी पेशेन्ट है।मै उससे मिलना चाहता हूॅ.बजाय इसके उसे बताने लग पड़ा कि मै बर्लिन से बस के ग्यारह घन्टे काट कर अभीं अभीं फ्राईबुर्ग आया हूॅ।उनकी बड़ी मेहरबानी होगी.अगर मै आन्या को एक बार दूर से ही देख पाता।

वाकई में मै आन्या को दूर से ही देख पाया।मुझे उसके कमरे मे जाने नही दिया गया।उसका दरवाजा बन्द था।इस दरवाजे मे शीशे की एक बड़ी सी खिड़की थी.जिस पर एक मोटा सा पर्दा पड़ा हुआ था।जब मैने उसे सरका कर अन्दर देखा.तो एक बार सकते मे ही आ गया।आन्या के पूरे बदन पर प्लास्टर चढा हुआ था।न जाने किन किन संयत्रों से उसे जोड़ा गया था।अपने बिस्तर पर वो बेजान लेटी पड़ी थी।मुझे इस खिड़की पर ज्यादे लम्बा भी नही रहने दिया गया और न ये भी बताया गया कि आन्या की हालत कैसी है।वो कब तक अपने कोमा से बाहर आ पाएगी.उसके बचने की कितनी सम्भावना है!मुझे कुछ नही बताया गया।मुझे ये वार्ड छोड़ना पड़ा।फ्राईबुर्ग भी मुझे कौन सा अपनापन देता!अपनापन दिलाने वाली तो अचेतन पड़ी थी।

मै पुनः ग्राऊन्ड फ्लोर पर आ गया और आ कर इनके कैन्टिन मे नाश्ता करने बैठ गया।तभी मुझे लिफ्ट का इन्तज़ार करते तीन जन दिखे।इनकी आन्या से कोई समानता तो न थी.पर मेरा मन कह रहा था कि ये आन्या के घर वाले हैं।मै गलत न था.ये वाकई आन्या के घर वाले थे।आन्या के माता पिता तो मुझसे बड़े औपचारिक ढंग से मिले।वो शायद मुझे जानते भी न थे।मागदालेना बड़े अपनापन के साथ मिली।उसी के कहने पर दुबारा मै इस वार्ड मे गया।ये तो पहॅुचते ही आन्या को जा घेरे.और मै दरवाजे पर खड़ा इन तीनो का रोना देखता रहा।

ग्राऊन्ड फ्लोर पर रिशेप्सन के ठीक सामने एक वेटिन्गरूम था।वहीं मै रात के आठ बजे तक बैठा रहा।वहॉ जितनी भी पढी पढाई पत्रिकायें बिखरी पड़ी थीं.उनके एक एक पन्ने उलटता पलटता रहा।इसी रूम मे बारी बारी से आन्या के माता पिता और उसकी बहन मुझसे आ कर मिल जाया करते थे।आन्या की मॉ का नाम यूटा और उसके पिता का नाम यूर्गन था।ये मुझे तुम ही कहके बुलाने लगे थे।पता है तुम्हे.कहते ही इनका गला भर जाता था।फिर ये मुझसे कुछ नही कह पाते थे।मुझे ऐसा लगता था कि रह रह कर इन्हे आन्या की कुछ ऐसी बातें याद आती थीं.जिनमे वो इनसे कुछ ऐसा कह जाती थी कि इन्हे अपने मॉ बाप होने पर गर्व होने लगता था।मुझे भी तो रह रह कर आन्या का यही कहा आज तक आलोड़ित कर जाता हैःमै तुम्हारा दिल नही दुखाना चाहती थी.फिर भी दुखा गई।रह रह कर मेरा मन रोने लगता था।आन्या दो मिनट भी मेरे बगल मे आ कर खड़ी क्या होती थी कि मेरा अस्तित्व अपनी अस्तित्वता के सैकड़ों कारणों में उलझ जाता था।मुझे अपना जीवन बेहद

सार्थक दिखने लगता था।
मुझे मोटेल तक पहुँचाने मागदा आई।रास्ते भर वो इस बात की जिद़ करती रही कि मै मोटेल छोड़ कर उसके पास आ जाऊँ.जो मै नही चाहता था।नींद से मेरी ऑखें जल रही थीं।मोटेल पहुँचते ही मै बिस्तर पर जा गिरा।रात के यही कोई तीन बज रहे होंगे कि मेरे टेलीफोन की घन्टी बजी।एक आशंका मेरे इर्द गिर्द जा कौंधी।मागदा से प्रमोद के अलावे कुछ भी बोला न जा सका।मेरे कानों मे बस उसकी सिसकियॉ सुनाई पड़ रही थीं।
आनन फानन मैने कपड़े बदले और एक टैक्सी ले कर अस्पताल पहुँचा।रिशेस्पन पर ही मुझे यूटा यूर्गन और मागदा मिल गये।आन्या ने अपनी ऑखें सदा के लिए मूँद ली थीं।अस्पताल के साऊथ रैम्प पर एक काली बस आ लगी थी।आन्या के कुछ रिश्तेदार भी आ पहुँचे थे।ठंढ की वजह से हम सब फ्लोर पर आ गये थे।अभीं भी चारो तरफ धूप्प अन्धेरा फैला हुआ था।बोलने की हालत मे कोई भी न था।रह रह कर मागदा की सिसकियॉ फूट पड़ती थीं।यूटा को थामे यूर्गन खड़े थे।हर मौत ही उदास होती है.फिर आन्या की उम्र भी क्या थी।वो तैंतीस वर्ष की भी न हो पाई थी।
तकरीवन छ बजे अन्धेरे ने परिवेश को अपने से मुक्त किया।
करीब सात बजे इस बस से दो आदमी बाहर निकले।दोनो ने काले रंग के सूट पहन रखे थे।इनकी टाईयॉ भी काले रंग की थी।एक बस का पिछला दरवाजा खोलने लगा और दूसरा हमे इशारे से ये कह गया कि एस इस्ट जो वाईट।हम भरभरा कर बाहर आये।ये दोनो बस से एक महागोनी का लाल रंग का बक्सा निकाल रहे थे।लिफ्ट नीचे आ कर रूक गई थी।ये लिफ्ट दूसरे लिफ्टों की तरह न थी।ये औसतन कुछ बड़ी और लम्बी थी।इसकी दीवारें एपीटैफों पर लिखे जाने वाले गद्यांशों से भरी पड़ी थीं।जेसस क्राईस्ट की भी न जाने कितनी तश्वीरें अलग अलग मुद्राओं मे थीं।बक्से को लिफ्ट मे रखा जा चुका था।उसके दरवाजे बन्द हो चुके थे।वो ऊपर सरकती जा रही थी।जो कुछ भी मै देख रहा था उस पर सहज विश्वास न हो रहा था।ये सब मेरे लिए एक दुखान्त सपना था।
ये दो काले यमदूत आन्या को लिए अपने ऑफिस जा रहे थे।उनके पास वहॉ एक ऐसा कमरा भी था.जहॉ का तापमान सौ डिग्री से ऊपर माईनस मे ही रहता था।जब तक कि इन्हे दूसरे डेटस नही मिल जाते.तब तक आन्या को उसी कमरे मे रखा जायेगा।
अब मै फ्राईबुर्ग मे एक पल भी लम्बा नही रहना चाहता था।आन्या के घर वालों के हर निमंत्रण को ठुकरा कर मैने बर्लिन जाने वाली एक बस पकड़ ली।वहॉ मुझे पहुँचाने मागदा ही आई थी।मै उसे गले लगा कर बस में चढने ही वाला था कि उसने एक लिफाफा मुझे पकड़ाया।लिफाफे पर मेरा नाम और पता लिखा था।ये आन्या की लिखावट थी.पर इस पत्र को खोल कर पढा जा चुका था।
आन्या के ये पत्र आज भी मेरे पास है।आन्या ने मुझे सिर्फ इस वजह से ठुकरा दिया कि जिस परिवार की कल्पना मै करता था.वो उसे साकार नही कर सकती थी।उसे क्रॉनिक एपीलैप्सी थी.जिसका कोई इलाज नही था।ये सही है कि हर परिवार की सुन्दरता बच्चों से ही होती है.जिन्हे आन्या अपनी बीमारी की वजह से जनना नही चाहती थी।मै उसके मन पर अंकित एकमात्र चेहरा था।वो मुझे अपने मन से हटा ही नहीं सकती थी।उसका ये कहा मैने शब्दवत लिया।ःमेरे पास तुम्हारे प्यार का कोई प्रतिदान नही हैःउसने झूठ बोला था।वो मुझसे उतना ही प्यार करती थी जितना कि मै उससे।मानो तो विश्वास है और न मानो तो पत्थर।
पता नही क्यों अपने इस पत्र को उसने मुझे नही भेजा!इस पत्र को लिखने के बाद वो दो वर्ष और जीवित रही और फिर मुझे अल्विदा कह गई मै आन्या को अपना कर अपने आप को बेहद भाग्यशाली पाता।उसकी तन मन से सेवा करता।मेरे पास भी ऐसा कौन सा राजवंश था.जिसके लिए मुझे किसी उत्तराधिकारी की आवश्यकता थी।परन्तु उसने मुझे मौका ही नही दिया।मन की आस मन मे ही रह गईः

प्रमोद कुमार सिंह